कब तक इंतजार करूँ...

"मुझे आज भी याद है वह पल जब दो साल पहले घर से चिठी आई थी। तब मैं हिमाचल बोर्डर में था, मेरा साथ मेरे साथी भी खुशी मनाए... माँ ने बताया बिलकुल मेरी पर गई है मेरा लड़की।" रेल गाड़ी में सब लोग कप्तन जीवन की बातें सुन रही थी, जीवन दो साल से अपना घर नही गया, आज पहली बार वह अपनी दो साल उम्र की बेटी को देखने जा रहा था। हर एक साल उसे अपनी बच्ची को देखने की इच्छा थी लेकिन कर नही पाया।

"आप इतने साल वापस घर क्यूँ नही गए?" यात्रीयों में एक उससे पूछा।

"पहली बार जब चिठी आई तब मुझे जाने कि इच्छा हुई, लेकिन हर बार किसि न किसि काम आ जाते थे।" पहलवान कि बातें बहुत सक्त थे। उसकी मुसकुराती चहरे पर कुछ तो था जो कोइ भी एक साधारण व्यक्ती के सोच के बाहर थे। जीवन ने अपने बेग खोलकर उससे एक फोटो निकाला. "यह है मेरा बेटी सनुषा और मेरी पत्नी सोना।" जीवन ने सबको दिखाया। जीवन के आगे वाली सीठ पे एक छोटी बच्ची थी उसने फोठो देखकर पूछी, "क्या आप अपने परिवार को याद नही करती?" जीवन मुसकुराकर कहाँ, "हाँ ज़रूर।" "मैं भी करती हूँ। मेरे पिताजी भी पेहलवान थे।"

बात - बात पर जीवन को पता चला कि उस लड़की का नाम गायत्री है और वह पाँच साल की है।" उसने गायत्री को गौर से देखा। गायत्री के मुस्कुराहट कि किरनें एक सपना जैसा उसको लगा। "तुम कहाँ जा रही हो?" जीवन ने उससे पूछा। गायत्री हैरानी से अपने मामा कि ओर देखी। "उसकी पिताजी एक जंग में मारा गया और उसकी माँ नही है, इसलिए मैं इसे अपना घर ले जा रहा हूँ।" उसकी मामा जवाब दिया, लेकिन जीवन इस जवाब से संतुष्ट नही था।

गायत्री और उसकी मामा एक दूसरे से बात नही करते थे, एक दूसरे को देखते भी नही थे। जीवन कुछ देर बाद शौचालय जाने केलिए गया, जब वह वापस आया गायत्री सो चुकी थी और उसके मामा एक यात्रीक से बातें कर रही थी। जीवन उस बातचित को सुनने का पूरा कोशिश किया। "उसने ही उसकी माँ को मारा जब वह पैदा हुआ तब माँ को मारा अब उसका बाप भी चला गया। कैसा बच्ची के साथ क्या करूँगा मैं?" मामा की यह बात सुनकर जीवन शौक गया। जीवन उस बच्ची की मासूम चहरे पर देखा, 'क्या वह ठीक हो मा से रह पाएँगी?' जीवन ने अपनी आप से पूछा।

लेकिन जीवन कर भी क्या सकते थे। मौनता ने उसे गौर लिया। अगले ही स्टेशान पर गायत्री और उसके मामा उतर गए थे, जीवन कुछ नही कर पाया।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 107

जीवन को गायत्री के सीट से कुछ मिला, उसकी एक छोटी सी फोटो। उसमें उसके पिता भी थे। जीवन ने उसके पिता को अचानक से पहचाना "राम" उसने कहाँ। एक साल पहले एक जंग में राम का मृत्यु हुई थी। जीवन का सबसे अच्छा दोस्त। जीवन भी रेल गाड़ी के जाने से पहले ही उसी स्टेशन पर उतरा उसे फोटो वापस देने के लिए। वह गायत्री और उसके मामा को हर जगह खोजा लेकिन कही नहीं मिला। भीड़ धीरे-धीरे कम होने लगा... रात होने लगी। जीवन की आखरी गाड़ी 10 बजे है अब 9 बज चुके थे।

जीवन एक बेंज पर उस फोटो को लेकर बैठा, अचानक से किसिके रोने की आवाज़ उसे सुनाई दिया। जीवन ने उसके चारों ओर देखा, गायत्री मिल गई। वह दुर एक बेंज पर अपनी चेहरा हाँथों में छुपाकर रो रही थी। जीवन दौड़कर उसकी पास पहुँचा। "क्या हुआ गायत्री?" जीवन के आवाज़ सुनते ही उसने उसे गले लगाया। "मामा खाना लेने गाया था 4 बजे लेकिन अब तक वापस नहीं आया।" गायत्री ने रो-रोकर बताया।

गायत्री के पास जीवन ने एक चिट्ठी देखी, "मैं उसे यहाँ छोटकर जा रहा हूँ।" बस इतना ही लिखा था उसमें। जीवन गायत्री की ओर देखा उसे अब समज आया उसकी मुसकुराहट

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

उसे राम से मिलि थी। उन दोनों गायत्री के खुशी केलिए एक साथ 10 बजे तक मामा केलिए इंतजार किया। आखरी गाड़ी आ चुकी थी। "क्या तुम मेरे साथ आना चाहते हो? सनुषा के बदी बहन बनके?" जीवन ने गायत्री से पूँछा। गायत्री जीवन कि ओर आश्चर्य होकर देखा। "कब तक इंतजार करूँ..." जीवन गायत्री के हाथ थामकर वह एक साथ चला।

इस समय पहले श्री रेल गाड़ी में यात्रीयों को जीवन का एक चिट्ठी मिला जो उसके माँ ने उसके लिए लिखा था।

"प्रिय जीवन... मैं अब बूटी हो रही हूँ। सनुषा बेटी अब दो साल कि हो चुकी है, सोना को खुजरते हुए भी दो साल हो चुके, मैं आज और कल खुजर जाऊँगी अपनी सनुषा अकेलि हो जाएगी। तुम वापस आ जाओ, मैं कब तक इंतजार करूँ... प्यार से तुम्हारी माँ।" इस खत के तारिख एक साल पुराना था। रेल गाड़ी के एक ओर यात्री काप्ठन ~~राम को पहचाना।~~ जीवन को पहचाना। "अरे अरे ये तो..." काप्ठन जीवन के परिवार एक आँग में जल चुके थे, उसमें उसकी दो साल कि बेटी और माँ मर गयी।" उस यात्री ने बताया। उसकी मुसकुराहट के पीछे यह राज था। राज्य कि रक्षा करते-करते अपनी जन्म भूमि केलिए अपनी परिवार खोया। उसकी माँ

उसकी इंतजार में मर गयी, दो साल के इंतेजार की बाद भी जीवन उसके बेटी को नही देख पाया। लेकिन उसकी अच्छाई केलिए उसे गायत्री मिल गई। जिंदगी उसकी इंतजार केलिए एक बेटी दिया। इस कहानी एक माँ कि, एक पहलवान कि, उसकी ष परिवार कि इंतजार कि है... एक पहलवान और उसकी परिवार कब तक इंतजार करूँ हमारी सुरक्षा केलिए..?

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)